Page No.
Date

NAME → DOLLY JAIN

ROLL NO. → 17044529002

PAPER NAME → ACTING & SCRIPT WRITING

PAPER CODE → 12133901

YEAR → IInd

COURSE → BA (Hons) SANSKRIT

Generated Via PDF Scanner

Page No.
Date

अभिज्ञान शाकुन्तलम् तथा स्वप्नवासवदत्तम् के आधार पर विदूषक का चरित्र चित्रण और उसके शास्त्रीय लक्षण

विश्व रंगमंच में विदूषक की परिकल्पना भारतीय नाटकों में एकमेव है। नाट्यशास्त्र के रचयिता भरत मुनि ने विदूषक के चरित्र एवं रूपरंग पर काफी विचार किया है। विदूषक का अर्थ होता है— "हास्यकृच्च विदूषकः" अर्थात् हास्य उत्पन्न करने में निपुण।

लक्षणः "कुसुमवसन्तायभिधः कर्मवपुर्वेषभाषायैः।
हास्यकारः कलहरतिर्विदूषकः स्यात् स्वकर्मज्ञः॥"

अर्थात् जो अपने कार्यों, शारीरिक चेष्टाओं, वेष और बोली, आदि के द्वारा जनता को हँसाता है, कलह में प्रेम करता है और अपने हास्य के कार्य को ठीक जानता है, उसे विदूषक कहते हैं। कुसुम, वसन्त, आदि उसके नाम होते हैं।

अभिज्ञान शाकुन्तलम् में भी विदूषक का चित्रण इसी प्रकार किया गया है। इस नाटक में विदूषक का नाम माधव्य है। विदूषक के लक्षण की दृष्टि से "अभिज्ञान शाकुन्तलम्" के विदूषक इस प्रकार हैं—

हास्य रस का पात्र
i) भीरु स्वभाव
ii) सरल स्वभाव
iii)

i) हास्य रस का पात्र → माधव्य हास्य रस का पात्र है तथा जाति का ब्राह्मण है। नाटक में विदूषक हास-परिहास के लिए

Generated Via PDF Scanner

होता है। अतः उसे हास्य के पात्र के नाम से जाना जाता है। "अभिज्ञान शाकुन्तलम्" में विदूषक माधव्य समय-समय पर हास-परिहास का प्रदर्शन करता रहता है। इस नाटक में हास-परिहास का उपयोग नाटक के कथानक में पर्याप्त सहायक है। माधव्य सदैव खाने-पीने की बातें करता है अर्थात् वह स्वभाव से पेटू है। नाटक के द्वितीय अंक में विश्राम करने के बाद जब राजा दुष्यन्त उससे पूछते हैं कि क्या आप मेरे एक कार्य में सहयोग करेंगे? तो वह तुरंत कह पड़ता है कि "किं मोदकम्-खादिकायाम" (क्या लड्डू खाने में) विदूषक राजा दुष्यन्त का मित्र है तथा वह उनसे खुलकर हँसी-मजाक भी करता है।

भीरु स्वभाव → विदूषक माधव्य भीरु स्वभाव का है। वह राक्षसों की बात सुनकर डर जाता है। जब राजा दुष्यन्त एक साथ दो कार्यों के धर्म-संकट में फँस जाते हैं तो वह राजा से कहता है कि आप त्रिशंकु के समान बीच में लटके रहिए। "भो त्रिशंकुरिव अन्तरा तिष्ठ"।

सरल स्वभाव → माधव्य अत्यन्त सरल एवं सीधे स्वभाव का है। जब राजा-शकुन्तला-विषयक 'प्रणय-व्यापार' को 'परिहास-विजल्पन' कहता है तो वह उसे उसी रूप में स्वीकार कर लेता है। देखने में वह अत्यन्त साधारण व्यक्ति लगता है। वह अनेक स्थान पर राजा दुष्यन्त को सान्त्वना देता है, उचित परामर्श देता है और उसका मनोरंजन करता है।

स्वप्नवासवदत्तम् में भी विदूषक का चरित्र परिहास कराने वाला ही है। इस नाटक के विदूषक का नाम वसन्तक है।

Generated Via PDF Scanner

वह स्वभाव से अत्यन्त गंभीर है। वह केवल हास्य रस का साधन नहीं है अपितु राजा के प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य में सतर्कता से सहायता करता है। वह स्वामिभक्त है। उसमें सौजन्य, सहानुभूति आदि गुण विद्यमान है। उसे मधुर भोजन बहुत प्रिय है। पद्मावती के विवाह में अत्यधिक भोजन करने के कारण वह उदरविकार से ग्रस्त हो जाने पर दासी से कहता है—

"सर्वमानयतु भवती वर्जयित्वा भोजनम्। अद्यन्यस्य मम कोकिलानामक्षिपरिवर्त इव कुक्षिपरिवर्तः संवृत्तः।"

वासवदत्ता और पद्मावती में कौन अधिक प्रिय है, ऐसा राजा के द्वारा पूछने पर वह बड़ी चालाकी से कहता है कि यद्यपि मान्या पद्मावती दर्शनीय, क्रोध रहित एवं मधुर भाषिणी हैं तथा सभी लोगों समान अनुराग रखती हैं किन्तु वासवदत्ता में एक और महान गुण था कि वे स्वादिष्ट भोजन लेकर मुझे ढूँढा करती थीं कि आर्य वसन्तक कहाँ गए।

वसन्तक हास्य-प्रिय है। लतामण्डप में पद्मावती की दासी के द्वारा भंवरे उड़ाए जाने पर वह व्याकुलता का अभिनय करते हुए कहता है — 'दास्या पुत्रैर्मधुकरैः पीड़ितोऽस्मि'।

समुद्र यात्रा में राजा को कहानी सुनाते समय वह लोगों को हँसाने के लिए ही जानबूझकर राजा का नाम काम्पिल्य और नगर का नाम ब्रह्मदत्त बताता है। वसन्तक विनोदप्रिय होने पर भी बुद्धिमान है। वह राजा को बड़ी होशियारी से वासवदत्ता के शोक से निकलने के लिए समझाता है — 'धारयतु-धारयतु भवान'।

Generated Via PDF Scanner

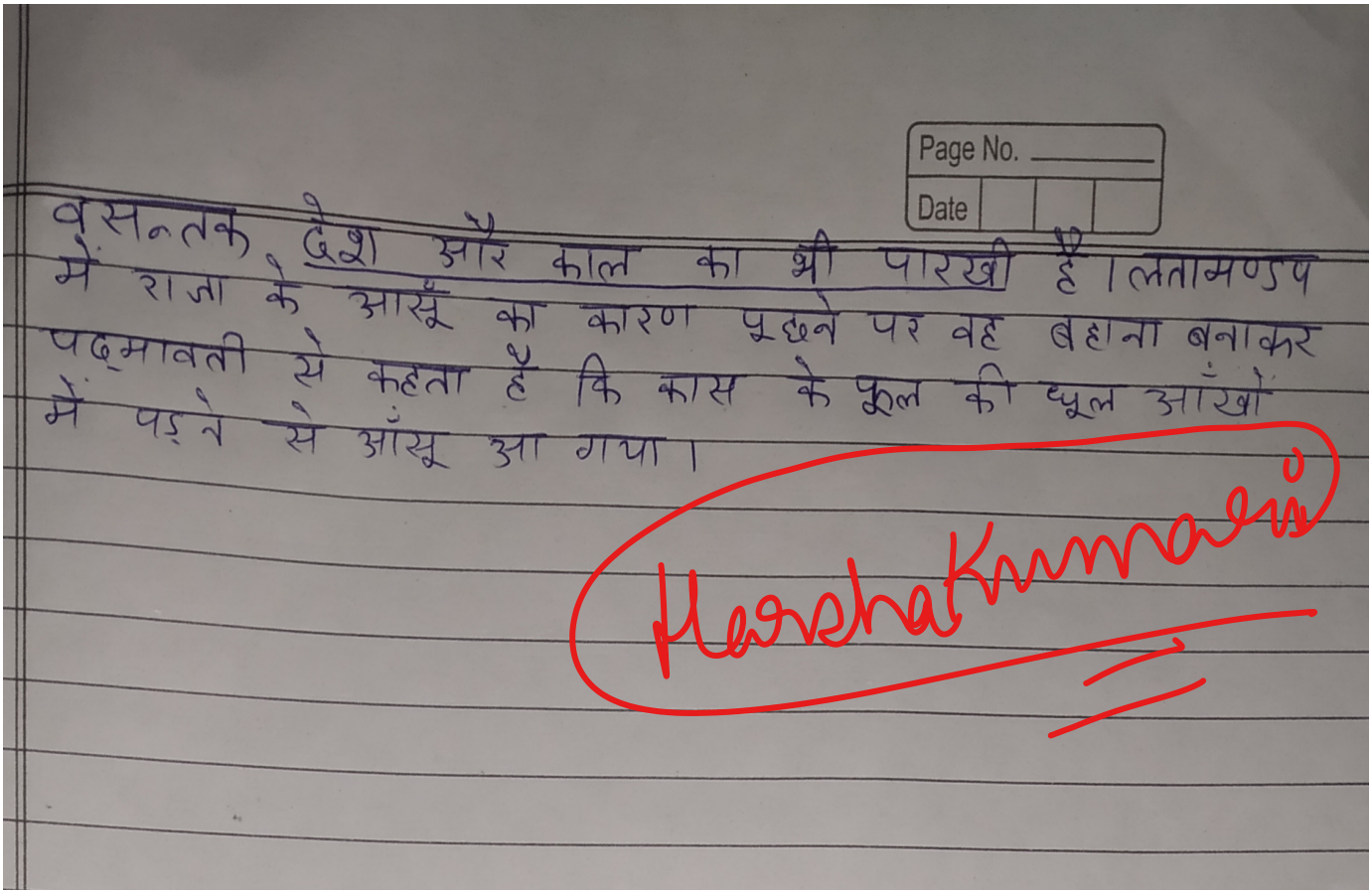

Page No. ______

Date

वसन्तक देश और काल का भी पारखी है। लतामण्डप में राजा के आँसू का कारण पूछने पर वह बहाना बनाकर पद्मावती से कहता है कि कास के फूल की धूल आँखों में पड़ने से आँसू आ गया।

Harshakumari

Generated Via PDF Scanner